कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई -17 जुलाई, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

अदापुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। अगले 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चरा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

अरेराज प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

बंजरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

चकिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

चिरैया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।

गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

छौरादाना प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।

सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॅास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र

पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

ढाका प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।

सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॅास जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ **पिपराकोठी** **दिनांक** 12.07.2019

घोड़ासन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।

	ओल	
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा / हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

हरसिद्धि प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की

		ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ **पिपराकोठी** **दिनांक** 12.07.2019

कल्याणपुर प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति

		प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1.5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से बचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

9473000861

head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)

9368411887

gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी — दिनांक 12.07.2019

कोटवा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा

		के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

मधुबन प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा

		दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

मेहसी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा

		दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

पिपराकोठी प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा

		दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

पहाड़पुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा

		दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

पकड़ीदयाल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।

- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।

फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

पताही प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।

- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।

दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

फेनहारा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते

		रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

रामगढ़वा प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग

		सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की

		बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

संग्रामपुर, प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग

		सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की

		बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

तेतरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।**
- **अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।**

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

		करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

तुरकौलिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

		करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

केसरिया प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

		करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

रक्सौल प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उत्तर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

		करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13जुलाई .17 जुलाइ, 2019)

रेफरेस 11/AAS/ पिपराकोठी दिनांक 12.07.2019

सुगौली प्रखंड के लिए कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उतर बिहार में पूर्वानुमान की अवधी में मानसून के सक्रिय रहने की संभावना है। जिसके प्रभाव से आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। 13–14 जुलाई के दौरान अधिकांश स्थानों में गरज वाले बादल बनने के साथ भारी वर्षा होने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 17 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 90 प्रतिशत रहने की संभावना है।

फसल	अवस्था	जुलाई माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		वर्षा की संभावना को देखते हुए धान की रोपाई हेतु, वर्षा जल का संग्रह खेत में करने के लिए मेड़ों को मजबूत बनाने का कार्य करें। जिन किसानों के पास धान का विचड़ा तैयार हो वे नीची तथा मध्यम जमीन में रोपनी करें। धान की रोपाई के समय उर्वरकों का प्रयोग सदैव मिट्टी जाँच के आधार पर करें। यदि मिट्टी जाँच नहीं कराया गया हो तो मध्यम एवं लम्बी अवधि की किस्मों के लिए 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर एवं 30

		किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट या 15 किलोग्रम प्रति हेक्टर चिलेटेड जिंक का प्रयोग करें। अगात एवं मध्यम धान की किस्में, जिनकी किसान भाई सीधी बुवाई करना चाहतें हैं उसके लिए मौसम उपयुक्त है। बारिश का समय चल रहा है अतः किसान खेत को सूखने तक की प्रतिक्षा ना करें, बल्कि पानी लगे हुए खेत में ही धान को छिटकवा विधी से सीधी बुवाई करें। धान की रोपाई के समय 25–30 किलोग्राम नेत्रजन, 50 किलोग्राम स्फुर एवं 20–25 किलोग्राम पोटाश के साथ 25 किलोगाम जिंक सल्फेट का व्यवहार करें। बीज को बविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीजोपचार कर बुआई करें।
मक्का		वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्का फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। खरीफ मक्का की सुआन, देवकी, शक्तिमान–1, शक्तिमान–2, राजेन्द्र संकर मक्का–3, गंगा–11 किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। प्रति किग्रा0 बीज को 2.5 ग्राम थीरम द्वारा उपचारीत कर बुआई करें। बीज दर 20 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर रखें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
मूंग उडद		मूंग एवं उडद की तैयार फलियों की तुडाई अविलंब कर लें। मूंग, उरद की तुड़ाई के बाद हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।
सब्जियाँ	भिंडी नेनुआ,करैला लौकी खीरा ओल	उचॉस जमीन में बरसाती सब्जियाँ जैसे– भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। गरमा सब्जियों की फसल में कीट–व्याधियों की निगरानी करते रहें। ओल की फसल में खर–पतवार निकालें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनो के हो गये हो, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़क सकते है। कीट–व्याधियों से नर्सरी की निगरानी करते रहें।
लीची		लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ 60 से 80 किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, 2.5 किलोग्रम यूरिया, 1. 5 किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, 1.3 किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें ।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पषुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	अगर मृदा की जांच नहीं करा पाये हो तो धान की बुआई से पहले करवा लें। धान की बुआई का उचित समय है। अतः बुआई के समय एन.पी.के. के साथ जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हे0 की दर से उपयोग करें। संभव हो तो धान के खेत में एजोला खाद का उपयोग

		करें। लीची के बगीचों में जुताई कर के खाद मिलायें।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com